eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

''प्रेमचन्द की कहानियों में स्त्री जीवन का यथार्थ''

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह
[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 12 Jan 2020, Accepted: 19 Jan 2020, Published on line: 30 Jan 2020

Abstract

प्रेमचन्द जी को आदर्शोन्मुख यथार्थवादी लेखक माना जाता है। उन्होंने अपनी कहानियों में भारतीय नारी–जीवन का सर्वांगीण यथार्थ प्रस्तुत किया है। स्त्री चाहे किसी भी समाज या वर्ग की हो, उसे अनेक सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, अन्धविश्वास तथा पुरातन परम्परा की बेड़ियों ने जकड़ रखा है। वह अपने सतीत्व तथा स्वाभिमान की रक्षा हेतु पुरुषसत्तात्मक समाज में सदैव संघर्ष करती हुई दिखाई पड़ती है। तत्कालीन समाज में प्रचलित बाल–विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि कुप्रथाओं के जाल में सदैव स्त्री का ही शारीरिक, मानसिक व आर्थिक शोषण हुआ है, जिसका यथार्थवादी चित्रण प्रेमचन्द की अधिकांश कहानियों में मिलता है।''

मुख्य शब्दः– मुंशी प्रेमचन्द, आदर्शोन्मुख यथार्थवाद, भारतीय नारी–जीवन, सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों, अन्धविश्वास तथा पुरातन परम्परा की बेड़ियां।

प्रस्तावना

कथा और उपन्यास यद्यपि कल्पना की सृष्टि हैं, तो भी उनमें असीम सत्य निहित रहता है। कभी–कभी इनमें प्रतिपादित सत्य हमारे इन्द्रियानुभूत सत्यों का अतिक्रमण कर जाता है इस कारण से जीवन को समझने में कथा और उपन्यास उपयोगी है।''[1] वस्तु स्थिति के सत्य को यथार्थ और यथार्थ को उसी रूप में प्रकट करने को सामान्यतः यथार्थवाद मान सकते हैं जब वह व्यक्ति की सीमा को लाँघकर समूह का यथार्थ बनने की क्षमता रखता हो।

हिन्दी कहानी साहित्य में यथार्थवादी कहानी–लेखक के रूप में प्रेमचन्द का नाम विशेष रूप से लिया जाता है। प्रेमचन्द जी ने अपनी कहानियों में स्त्री जीवन के यथार्थ को बहुत ही सजगता के साथ उद्धृत किया है। इनकी कहानियों के अधिकांश स्त्री पात्र ग्रामीण तथा मध्यम वर्ग के हैं जो प्रायः अशिक्षित भी हैं। प्रेमचन्द जी का भारत के इतिहास के ऐसे काल में पदार्पण होता है जब समाज

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

में अनेक आडम्बर एवं कुरीतियों का बोलबाला था। समाज पुरानी रूढ़ियों एवं मान्यताओं में जकड़ा हुआ था। स्त्री के अधिकार सीमित होते थे। किन्तु फिर भी स्त्री अपने सतीत्व व अस्मिता की रक्षा हेतु सामंती व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करती दिखाई देती थी। प्रेमचन्द के समय में नारी की सामाजिक, राजनैतिक, शैक्षिक, आर्थिक स्थिति तथा उसे प्रभावित करने वाली परिस्थितियां विद्यमान थीं। इस समय समाज में बाल विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि समस्याएं थीं। प्रेमचन्द जी ने इन्हीं सामाजिक समस्याओं को अपनी अधिकांश कहानियों की विषयवस्तु बनाकर सामाजिक जीवन में स्त्री का यथार्थ उद्घाटित किया है। इनकी कहानियों में भारतीय समाज व संस्कृति के प्रति आस्था तथा भारतीय नारी के प्रति सहानुभूति भी देखने को मिलती है। प्रेमचन्द जी 'हंस' पत्रिका के दिसम्बर 1932 के अंक में 'महिलाओं में नवीन जागृति' शीर्षक से लिखते हैं ''वे सार्वजनिक निर्वाचनाधिकार चाहती हैं, जायदाद या शिक्षा की कोई कैद उन्हें पसन्द नहीं और राष्ट्रीय एकता का जितने जोरों से समर्थन स्त्रियों ने प्रत्येक अवसर पर किया, उस पर बहुत से हिन्दू और मुसलमान युवकों को लज्जित होना पड़ेगा।''[2]

प्रेमचन्द की कहानियों के अधिकांश पात्र मध्यम वर्ग के हैं। उनका मानना है कि भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के अनुसरण में ही स्त्री का कल्याण निहित है। 'मानसरोवर' भाग सात में 'शान्ति' नामक कहानी की प्रमुख पात्र श्यामा के माध्यम से वे यह दिखाते हैं कि पाश्चात्य सभ्यता एवं संस्कृति दिखावटी एवं असन्तोषमय हैं जबकि भारतीय संस्कृति स्थायी और संतोषप्रद है। श्यामा को सम्बोधित करते हुए उसका पति कहता है, ''हाँ इस जिन्दगी से तंग आ गया हूँ मैं। अब समझ रहा हूँ जिस स्वच्छ लहराते निर्मल जल की ओर दौड़ रहा था वह मरुभूमि है। मैं इस प्रकार जीवन के बाहरी रूप पर लट्टू हो रहा था परन्तु अब मुझे उनकी आन्तरिक अवस्थाओं का बोध हो रहा है। इन चार वर्षों में मैंने उपवन में खूब भ्रमण किया और उसे आदि से अन्त तक कष्टमय पाया। यहाँ न तो हृदय को शांति है और न आनन्द। यह अत्यन्त अशांतिमय स्वार्थपूर्ण विलासयुक्त जीवन है। यहाँ न नीति है, न धर्म, न सहानुभूति, न सहृदयता। परमात्मा के लिए मुझे इस अग्नि से बचाओ। यदि कोई और उपाय न हो तो अम्मा को पत्र लिख दो वह अवश्य यहाँ आवेंगी। अपने अभागे पुत्र का दुःख उनसे न देखा जायेगा। उन्हें इन सोसाइटी की हवा अभी नहीं लगी है। वह आवेंगी। उनकी वह ममतापूर्ण दृष्टि वह स्नेह शुश्रूषा मेरे लिए सौ औषधियों का काम करेगी। उनके मुख पर वह ज्योति प्रकाशमान होगी, जिसके लिए मेरे नेत्र तरस रहे हैं। उनके हृदय में स्नेह है, विश्वास है। उनकी गोद में मर भी जाऊँ

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

तो मेरी आत्मा को शांति मिलेगी।''[3] इससे पता चलता है कि नारी पुरुष को सहायता प्रदान करती है तथा पुरुष को विकास पथ पर अग्रसर करती है।

'मानसरोवर' भाग तीन की 'निर्वासन' कहानी में पात्र मर्यादा कुछ विवाद के कारण पति से अलग हो जाती है तथा कुछ दुराचारी लोगों के साथ पड़ने से उसका मन बहक जाता है। उस गिरोह की एक बूढ़ी औरत उसे प्रलोभन देते हुए कहती है कि ''रो–रो कर जान दे दोगी लेकिन कोई तुम्हारी मदद को न आवेगा। तुम्हारा एक घर छूट गया, हम तुम्हें उससे अच्छा घर देंगे जहाँ तुम सोने के कौर खाओगी और सोने से लद जाओगी।''[4] लेकिन मर्यादा बुरे वक्त में भी बुद्धि से काम लेती है और अपने सतीत्व की रक्षा करते हुए दुराचारियों के गिरोह से निकल जाती है।

प्रेमचन्द की कहानी 'स्वामिनी' में विधवा रामप्यारी अपने परिवार के लिए समर्पित है। वह अपने स्वयं के सुख दुःख को भूलकर परिवार की सेवा करती है। जिससे प्रभावित होकर उसका ससुर शिवादास अपने पास रखा चाभियों का गुच्छा रामप्यारी की तरफ फेंक कर कहता है, "आज से गृहस्थी की देखभाल तुम्हारे ऊपर है, मेरा सुख भगवान से नहीं देखा गया। नहीं तो क्या जवान बेटे को यों छीन लेते?"[5] इससे स्पष्ट है कि समाज में नारी को गृहिणी व स्वामिनी का स्थान तो मिलता ही था, साथ में समाज के निर्माण में नारी की भूमिका भी अहम होती थी।

'मानसरोवर' भाग आठ में प्रकाशित कहानी 'बूढ़ी काकी' एक विधवा औरत की कथा है जो एक भारतीय वृद्ध औरत का प्रतिनिधित्व करती है। भारतीय समाज में स्त्री का विधवा होना बहुत दुर्भाग्यपूर्ण माना जाता है। बूढ़ी काकी के पति का देहांत हो जाने के बाद उन्होंने अपना सब कुछ बुद्धिराम को और उनकी पत्नी को दे दिया। बूढ़ी काकी के चित्रण में प्रेमचंद ने भारतीय समाज में रहने वाली बुढ़िया में विद्यमान सभी गुणों का समावेश किया। वह घर में बन रहे पकवान व मसाले की सुगंध से बैचेन रहती है। वह अपनी कोठरी में रूपा के भय से रो भी नहीं सकती। ''आह! कैसी सुगन्ध है, अब मुझे कौन पूछता है? जब रोटियों के ही लाले पड़े हैं तब ऐसे भाग्य कहाँ कि पूड़ियाँ मिले। यह विचार कर उन्हें रोना आया, कलेजे में हूक सी उठने लगी परन्तु रूपा के भय से उन्होंने फिर मौन धारण कर लिया।[6] प्रेमचन्द ने बूढ़ी काकी के माध्यम से भारतीय परिवार में वृद्ध नारी के जीवन यथार्थ को प्रस्तुत किया है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

प्रेमचंद की कहानियों में दहेज प्रथा की समस्या को भी उठाया गया है। 'मानसरोवर' के भाग तीन में प्रकाशित कहानी 'उद्धार' में प्रेमचन्द जी दहेज की समस्या से कहानी का प्रारम्भ करते हुए लिखते हैं कि ''हिन्दू समाज की वैवाहिक प्रथा इतनी दूषित, इतनी चिन्ताजनक, इतनी भयंकर हो गयी है कि कुछ समझ में नहीं आता कि इसका सुधार कैसे हो। बिरले ही माता–पिता ऐसे होंगे जिनके सात पुत्रों के बाद भी एक कन्या उत्पन्न हो जाय तो वह सहर्ष उनका स्वागत करें। कन्या का जन्म होते ही उनके विवाह की समस्या सिर पर सवार हो जाती है और आदमी उसी में डुबकियाँ खाने लगता है। अवस्था इतनी निराशाजनक एवं भयंकर हो गयी है कि ऐसे माता पिताओं की कमी नहीं है जो कन्या की हत्या पर हृदय से प्रसन्न होते हैं। मानो सिर से बाधा टली। इसका यही कारण है कि दिन दूनी रात चौगुनी पावसकाल में जल वेग के समान बढ़ता जा रहा है। जहाँ दहेज की सैकड़ों बातें होती थीं वहाँ हजारों की नौबत आ गयी।''[7] अपने समय की सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़िवादी परम्पराओं का चित्रण प्रेमचंद जी ने अपनी कथाओं में जिस प्रकार से किया है, वैसा अन्य कहानीकारों में देखने को नहीं मिलता।

'मानसरोवर' भाग चार में प्रकाशित कहानी 'आगा–पीछा' में एक वेश्या कन्या की वैवाहिक समस्या को उठाया गया है। कहानी की पात्र कोकिला एक वेश्या है जिसकी पुत्री का नाम श्रद्धा है। कोकिला के जब से श्रद्धा हुई है तब से उसका जीवन पूरी तरह से बदल गया है। वह श्रद्धा के सामने नारी जीवन का आदर्श प्रस्तुत करती है। वह नहीं चाहती कि समाज के पापियों की दृष्टि उसकी पुत्री पर पड़े। जब वह श्रद्धा को अपनी गोद में लेती है तो उसकी आंखों में आँसू छलकने लगते हैं और तब वह सोचती है ''क्या यह पावन ज्योति भी वासना के प्रचण्ड घातों का शिकार होगी? मेरे प्रयत्न निष्फल हो जाएंगे? आह! क्या ऐसी कोई औषधि नहीं है, जो जन्म के संस्कारों को मिटा दे? वह भगवान से सदैव प्रार्थना करती है कि मेरी श्रद्धा किसी कांटों में न उलझे।''[8] जब श्रद्धा बड़ी हो जाती है और विद्यालय जाने लगती है तो प्रतिष्ठित परिवार की लड़कियां उसके साथ रहने से अपने को अपमानित महसूस करती हैं। ''रास्ते में लोग अंगुली उठाकर कहते हैं कोकिला रण्डी की लड़की है। उसका सिर झुक जाता है, कपोल क्षण भर के लिए लाल होकर दूसरे ही क्षण फिर चूने की तरह सफेद हो जाते हैं।''[9] प्रेमचन्द ने निर्दोष श्रद्धा के प्रति समाज की घृणित मानसिकता को दिखाया है। कोकिला जब श्रद्धा के लिए विवाह की बात करती है तो श्रद्धा अपनी माँ से कहती है ''अम्मा प्रेम विहीन संसार में मौन है। प्रेम मानव जीवन का श्रेष्ठ अंग है। यदि ईश्वरता कहीं देखने

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 01, Jan 2020

में आती है तो वह केवल प्रेम में। जब कोई व्यक्ति मिलेगा जो मुझे वरने में अपनी मानहानि न समझेगा तो मैं तन मन धन से उसकी पूजा करूँगी पर किसके सामने हाथ प्रसार कर प्रेम की भिक्षा माँगूं? यदि किसी ने सुधार के क्षणिक आवेश में विवाह कर भी लिया तो मैं प्रसन्न न हो सकूँगी। इससे तो कहीं अच्छा है कि मैं विवाह का विचार ही छोड़ दूँ।''[10]

इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रेमचन्द की कहानियों में मध्यवर्गीय स्त्री जीवन का यथार्थ बहुत दयनीय था। समाज में व्याप्त सामाजिक कट्टरतापन के कारण बाल विवाह प्रथा प्रचलित थी जिससे समाज में विधवाओं की समस्या उत्पन्न हो गयी। रोजी रोटी के लिए तमाम विधवाओं ने वेश्यावृत्ति को अपना लिया। लेकिन फिर भी अपने कर्तव्य, त्याग, सेवा व समर्पण के भाव को अपने अन्दर संजोये रखा। प्रेमचन्द की कहानियों में स्त्री न केवल अपने सामाजिक अस्तित्व व अस्मिता की रक्षा हेतु संघर्ष करती प्रतीत हो रही है बल्कि पुरुषों में व्याप्त स्त्रियों के प्रति नकारात्मक अवधारणाओं के विरुद्ध भी संघर्षरत है।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी उपन्यास साहित्य का अध्ययन–डा0 एस0एन0 गणेशन, पृष्ठ–334
2. हंस–प्रेमचन्द, दिसम्बर 1932, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली पृष्ठ–124
3. मानसरोवर भाग–7 'शान्ति' पृष्ठ–55 सुमित्र प्रकाशन
4. मानसरोवर भाग–3 'निर्वासन' पृष्ठ–51
5. मानसरोवर भाग–1 'स्वामिनी' पृष्ठ–105
6. मानसरोवर भाग–8 'बूढ़ी काकी' पृष्ठ–92
7. मानसरोवर भाग–3 'उद्धार' पृष्ठ–38
8. मानसरोवर भाग–4 'आग–पीछा' पृष्ठ–111
9. वही पृष्ठ–112
10. वही पृष्ठ–114